International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-08-2021, Accepted: 28-08-2021, Published: 14-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 23-27

गजानन माधव मुक्तिबोध के साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार

डॉ. ममता गंगवार

एसो. प्रो. हिंदी विभागाध्यक्ष, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला, महाविद्यालय, हर्ष नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

श्री गजानन माधव मुक्तिबोध के व्यक्तित्व में निहित निडरता अपने सिद्धांतों के प्रति एकनिष्ठ तत्परता दृढ़ व स्वाभिमानी स्वभाव के कारण ही उन्हें हिंदी साहित्य जगत में संघर्ष करना पड़ा| उनकी जिज्ञासा कृति उन्हें बौद्धिक हलचलों के प्रखर वातावरण में खींच ले गई| राष्ट्र में व्याप्त अव्यवस्था एवं विसंगतियों से वे बेचैन थे| विद्रोही व्यक्तित्व वाले गजानन माधव मुक्तिबोध को जाति, कुल और सामाजिक वैषम्यों के अवरोधों के कारण माता-पिता व सम्बन्धियों के घोर विरोध का सामना करना पड़ा| उपेक्षितों और दलितों के लिए उनकी सहानुभूति तेजी से बढ़ी और उन्होंने वर्ग चेतना को छिटक दिया| पारिवारिक संस्कार युगीन परिस्थितियां नैतिक मूल्य क्रमश: व्यक्तित्व को संवारते सजाते हैं| मुक्ति-बोध का जीवन अत्यंत निष्कपट, निश्छल एवं सुगम था किंतु उनका व्यक्तित्व उनकी रचनाओं की तरह बहुआयामी था| साहित्यकार का व्यक्तित्व अंततोगत्वा उसकी रचनाओं से संयुक्त होता है उसकी अपनी जिंदगी तंग गलियों के चक्कर काटती हुई अस्तित्व संघर्ष के प्रयासों में भले समाप्त हो जाए किंतु वहां कि सृजनशीलता अनिवार्य रूप से बरकरार रहती है| हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन, राजनीतिक क्षितिज सभी में एक गहरी उथल-पुथल व्याप्त है जीवन के मानवीय मूल्य तेजी से बदल रहे हैं और उन्हीं के अनुरूप हमारा साहित्य भी नए-नए रूपों में आ रहा है| मुक्तिबोध ने अपने साहित्य में समाज के सभी पक्षों को चित्रित किया है जो उनके सामाजिक सरोकार को उदघाटित करते हैं|

मूलशब्द: सामाजिक विसंगतियों का चित्रण, पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध, मानवीय मूल्य, राष्ट्रीय भावना, विश्व बंधुत्व की भावना आदि|

प्रस्तावना

व्यक्तित्व वह सांचा है जिसमें रचनाकार का संपूर्ण जीवन ढलता है और पुष्ट होता है| मुक्तिबोध का जीवन निष्कपट निश्छल एवं सुगम था|

गजानन माधव मुक्तिबोध जनवादी, समाजवादी और प्रगतिशील साहित्यकार हैं| उनका साहित्य समाज का प्रतिबिंब ही नहीं सामाजिक संरचना की प्रक्रिया भी है| यह प्रक्रिया सामाजिक व्यवस्था, विघटित मूल्यों भ्रामक अवस्थाओं और पतनोन्मुख राजनीति के प्रति है| वे एक वैज्ञानिक की भांति दूर दृष्टि के कामी और साधक थे| व्यक्ति का मन जब विचारों की निष्कलुषता तक पहुंच अपनी उर्जा के झरोखे से सृष्टि और सृष्टितर विधानों का परीक्षण अपनी मनुष्यता की दृष्टि से करने में समर्थ हो पाता है तभी उसे कवि या साहित्यकार

की संज्ञा प्राप्त होती है| मुक्तिबोध जीवंत तत्वों को शाश्वत ज्योति देने के लिए कृत संकल्प थे इसीलिए उनके साहित्य में सौंदर्य प्रेम और घृणा का जन्म एक साथ रूप पाता है| सृजन के क्षेत्र में मौलिकता का दावा साहित्यकार और वैज्ञानिक ही कर सकता है|"[1]

जब समाज संघर्ष, घुटन, और रूढि और आत्म परायेपन में आबद्ध होता है तब साहित्यकार ही उसे नई दिशा देता है मुक्तिबोध के साहित्य में सामाजिक रूढ़ियों और जीवन संघर्ष की जैसी तथ्यात्मक प्रतीति हुई है वैसी अनियंत्र दुर्लभ है| जन सामान्य की वेदना को वाणी देने के कारण उचित रूप से सत चित वेदना के कवि कहलाने के अधिकारी हैं| तरुण जी कहते हैं - "सर्जन के संदर्भ में किसी कवि की चेतना विकसित रूप में तभी चरितार्थ समझी जा सकती है जब वह अपने अंतःकरण में और नेत्रों में समाज विषयक निम्नलिखित तथ्यों पक्षों और आयामों को गहराई से समग्र रूप में समेटकर आत्मसात कर अपनी चेतना की प्रगाढ़ता व समृद्धि का परिचय दें और संवेदना की भूमि से अपना कंठ खोले|"[2]

यह तथ्य उन पर पूर्णत: लागू होता है वह जीवन पर्यंत सामाजिक विसंगतियों को दूर करने में लगे रहे|

उन्होंने अपने साहित्य को सही मायने में जीवन यथार्थ का संवाहक बनाया आज के सार्थक कवि के विषय में मुक्तिबोध की धारणा थी- "आज ऐसे कवि चरित्र की आवश्यकता है जो मानवीय वास्तविकता का बौद्धिक और हार्दिक आंकलन करते हुए सामान्य जनों के गुणों और उनके संघर्षों से प्रेरणा और प्रकाश ग्रहण करें| उनके संचित जीवन विवेक को स्वयं ग्रहण करें तथा उसे और अधिक निखार कर कलात्मक रूप में उन्हीं को लौटा दे|"[3]

मुक्तिबोध की कविताओं में छदम आधुनिकता और उससे उत्पन्न विसंगतियों का त्रासद एवं व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण हुआ है| उनका व्यंग्य इतना तीखा है कि अंदर तक हिल जाता है| कहीं पूंजीवादी व्यवस्था पर तो कहीं आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति पर तीखा व्यंग्य किया है| "भूल गलती" 'एक अंतर्कथा' 'चाँद का मुँह टेढ़ा' 'डूबता चाँद कब डूबेगा' और 'अंधेरे' में कविताओं में कवि ने जीवन की विसंगतियों को व्यंग्य शैली में उदघाटित किया है| जीवन की बढ़ती हुई विसंगतियां एवं विभीषिकाओं का कवि तीक्ष्ण गहरी दृष्टि से देखा है यथा -

"आज के अभाव के, व कल के उपवास के, व
परसों की मृत्यु से,
दैन्य की महा अपमान के वे क्षोभपूर्ण भयंकर
चिंता के उस पागल यथार्थ का
दीखता पहाड़ स्याह|"[4]

मुक्तिबोध अनुभव कर रहे थे कि स्वार्थ अवसरवादिता और कृत्रिम मूल्यों का निरंतर फैलते जाने के कारण मानव जीवन विसंगतियों का पुंज बनता जा रहा है ऐसे करुणा विहीन लोगों पर तीखा व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं -

"लो-हित पिता को घर से निकाल दिया,
जनमन करुणा सी माँ को हलकान दिया
स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया, भावना
के कर्त्तव्य त्याग दिए.....
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में|"[5]

स्वातंत्र्योत्तर समाज में जातिवाद का बंधन तो ढीला जरूर हुआ किंतु वर्ग भेद, सांप्रदायिकता आर्थिक विषमता आदि प्रवृत्तियों ने सामाजिक चेतना को झकझोर दिया| कवि जीवन की विसंगतियों पर प्रहार करते हुए कहते हैं -

"मारकाट करती हुई सदियों की चीख, मुठभेड़ करते हुए स्वार्थ के बीच
भोले भाले लोगों के माथो के घाव, कुचल गए इरादों के बाकी बचे धड़|"[6]

कवि ने 'रावण' को आधुनिक सहस्रमुखी व्यवस्था का प्रतीक प्रस्तुत कर राजनीतिक चेतना का संकेत दिया है| राजनीति आज रक्षक की अपेक्षा भक्षक का रूप धारण कर चुकी है| तभी रामू के माध्यम से कवि स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि -

"रामू जानता है कि पूँजीवादी शक्तियाँ, जन-जन की छाती पर बैठकर
शासन के चाकू से, विद्रोहिणी बुद्धि की
त्रिकालदर्शी आँखों को काटकर
निकाल देना चाहती है|"[7]

बड़े साहित्यकार, कलाकार, राजनीतिज्ञ इसके फंदे में फंस जाते हैं| उन्हें अपना स्वार्थ साधना होता है -

"राजनीति साहित्य और कला के प्रतिष्ठित
महासूर्य बड़े-बड़े मसीहा
सरकस के जोकर से रिझाते हैं निरंतर नाचते हैं कूदते हैं|.....
चुपचाप आदर्शों को बाजू रख या भूलकर
अवसरवादी बुद्धिमता ग्रहण कर| बिल्कुल बिक जाते हैं|"[8]

मुक्तिबोध की कविता में शोषित-पीड़ित जनसामान्य का चित्रण सर्वाधिक है एवं उनसे सहानुभूति व्यक्त करने के लिए उनका वस्तु क्षेत्र उस शोषित जनजीवन का व्यावहारिक जगत है| अपरिचय तथा अकेलेपन के इस युग में भी उन्हें पूरा कस्बा एक बड़े परिवार के रूप में जीवन जीता दिखाई देता है -

"धुंधलके में खोये इस/रास्ते पर आते जाते दिखते हैं|
लठ-धारी बूढ़े से पटेल बाबा/ऊँचे से किसानदादा
वे दाढ़ी-धारी देहाती मुसलमान चाचा और/बोझा उठाये
सबको राम राम करने को चाहता है जी/आँसुओं से तर होकर प्यार के|"[9]

आधुनिक युग की आर्थिक विषमता मनुष्य की कोमल भावनाओं को कुचल देती है| अभावग्रस्त निम्न वर्ग अपनी कुंठित वृत्तियों एवं विवश जीवन की व्यवस्था भोग रहा है| आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि द्रष्टियों से अग्रसर होने में कमजोर जान पड़ता है| शोषक वर्ग दानव के रूप में शोषितों का गला घोट रहा है| शोषण के चक्रव्यूह में फंसे शोषित प्राण अति जर्जर होने से उनके आर्तनाद तथा मर्माहित कातर पुकार सुनाई पड़ती है| उनकी रचना समकालीन भारतीय मनुष्य की पीड़ा की खंडित रामायण है|

मुक्तिबोध को विश्वास है कि अत्याचारों का विनाश होगा यही कारण है कि "नाग देवता" की वंदना करते हैं और यह मानते हैं कि बिना संहार के सर्जन असंभव है| "यह भी मानते हैं की पूंजी से जुड़ा हृदय नहीं बदल सकता| वे स्पष्ट कहते हैं| यथा -

"कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ|
वर्तमान समाज में चल नहीं सकता|
पूंजी से जुड़ा हृदय बदल नहीं सकता, स्वतंत्र व्यक्ति का वादी
छल नहीं सकता, मुक्ति के मन को, जन को|"[10]

वर्गहीन समाज के निर्माण का स्वप्न ही समाजवाद की परिकल्पना है जो कवि मुक्तिबोध में निहित है| जिसकी अभिव्यंजना उनके साहित्य में विद्यमान है| वर्गरहित समाज का मूल ध्येय सर्वसुख, सर्वजन कल्याण, व्यक्ति नगण्य और समूह प्रमुख हो जाता है| वर्ग रहित समाज का उल्लेख कवि ने अपनी कविता में किया है| यथा-

"पृथ्वी पर युद्ध के बाद रूपांतरित धन्य, गहरी गली हो गई राजपथ लोग सुप्रसन्न|
जन जन सुखी, भव्य अनुरक्ति का काल, उतरा घने वृक्ष पर फिर वहीँ स्वर्ण खग|"[11]

हम हमारा समूह, हमारी शक्ति तथा हमारा मन कहकर एकता का भाव प्रकट किया| इसी के आधार पर वर्ग रहित समाज की स्थापना की जा सकती है|

मानवीय मूल्य से ओत-प्रोत अभिव्यक्ति मुक्तिबोध के साहित्य में सर्वत्र मिलती है| मूल्य की दृष्टि से आज व्यक्ति और समाज में स्वार्थ सीमित है| वे भारतीय मूल्यों को नए रूप में अपनी रचना के आधार पर विकसित करते हैं| यथा - "मुक्तिबोध की कविताएं ही उनके मूल्यों और प्रभावों की घोषणाएं हैं| उनकी कविताएं उनके जीवनानुभवों और संवेदनशील उद्देश्यों की काव्यात्मक परिणितियां है| .....उनका रागात्मक काव्य, उन भारतीय मानवीय गुणों का संरक्षक और प्रहरी है जो मध्य युग के आध्यात्मिक अंधकार में दबे पड़े हैं जिन्हें खोकर भारतीय निस्तेज और निष्क्रिय हैं आकाश के ग्रह नक्षत्रों से प्रेरणा और शक्ति प्राप्त करने वाले राष्ट्रीय संदर्भ में भारतीय मनुष्य की अस्मिता के कवि हैं|"[12]

सच्चा साहित्यकार वही है जो राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हो| अपने देश के प्रति देश की संस्कृति और परंपरा के प्रति और देश के सामाजिक जीवन के प्रति जैसी सशक्त भावना मुक्तिबोध के साहित्य में भरी पड़ी है| जिन लोगों के बलिदान से राष्ट्र का निर्माण हुआ है| ऐसे त्यागी बलिदानी देश भक्तों पर तो सौ-सौ जीवन न्योछावर किए जा सकते हैं| यथा -

"जिनके स्वभाव के गंगाजल ने| युगों-युगों को तारा है|
जिनके कारण यह हिंदू हमारा है| कल्याण व्यथाओं में घुलकर|
जिन लाखों हाथों पैरों ने यह दुनिया| पार लगाई है| जिनके पूत पावन चरणों में हुलसे मन|
से किए निछावर जा सकते सौ-सौ जीवन|"[13]

इस प्रकार उनके साहित्य में चित्रित देश प्रेम उनके अंतरंग देश भक्ति का ही प्रतिरूप है|

विश्व के राष्ट्रों की जनता में भातृत्व, प्रेमभाव तथा बंधुत्व स्थापित एवं पल्लवित होने से विश्व बंधुत्व की भावना जागृत होती है| कवि का मानना है कि मानव के प्रति मानव की संवेदनशीलता, स्नेह तथा बंधु प्रेम होने से विश्व बंधुत्व स्थापित हो सकता है| इसलिए उन्होंने अपने साहित्य में विश्व बंधुत्व की भावना को व्यक्त किया है| यथा-

"यह सही है कि चिलचिला रहे फासले| तेज दोपहर भूरी|
सब और गरम धार-सा रेंगता चल| काल बाँका तिरछा|
पर हाथ तुम्हारे में जब भी मित्र का हाथ,
फैलेगी बरगद छांह वही|
तुमको निहारती बैठेगी आत्मीय और इतनी प्रसन्न|
मानव के प्रति, मानव के जी की पुकार|
जितनी अनन्य|"[14]

मुक्तिबोध समस्त विश्व को संबोधित कर वहां घर-घर में मां और पिता के मिलन में आनंद वाष्पीकरण के संबंध को स्नेह भाव से व्यक्त करते हैं|

इस प्रकार नि:संदेह मुक्तिबोध के साहित्य में विश्व शांति तथा विश्व बंधुत्व की भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है| निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि आजीवन संघर्ष का विष पीकर अमृत बरसाने वाले गजानन माधव मुक्तिबोध के साहित्य में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति सर्वत्र दिखाई पड़ती है| सामाजिक रूढ़ियों और जीवन संघर्ष की जैसी तथ्यात्मक प्रस्तुति मुक्तिबोध के साहित्य में हुई; वैसी अन्यंत्र दुर्लभ है| उनके साहित्य में व्यक्ति और समाज का चिंतन अधिक है|

संदर्भ सूची

1. मुक्तिबोध के साहित्य में सामाजिक बोध: डॉo सुमन सिंह पृ.-65, रोशनी पब्लिकेशन, कानपुर, प्रथम सं.-2011
2. आधुनिक हिंदी कविता का विकास: सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ, डॉ. रामेश्वर खंडेलवाल तरुण, प्र.-47, हिंदी साहित्य निकेतन
3. नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, गजानन माधव मुक्तिबोध, पृ.-21, राजकमल प्रकाशन, 2018
4. चाँद का मुँह टेढ़ा है: गजानन माधव मुक्तिबोध, पृ.-36, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, षष्ठ संस्करण, 1979
5. चाँद का मुँह टेढ़ा है 'अंधेरे में' मुक्तिबोध पृ.-229, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, षष्ठ सं.-1979
6. तार सप्तक सं. अज्ञेय, पृ.-40, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन कनॉट प्लेस नई दिल्ली
7. सतह से उठता आदमी, मुक्तिबोध, प्र.-184, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ सं.-2000
8. वही, पृ. 243-244 प्रथम खंड
9. चाँद का मुँह टेढ़ा, मुक्तिबोध पृ.-41
10. मुक्तिबोध, रचनावली द्वितीय, खंड सं. नेमीचंद जैन, प्र.-76, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. वही पृष्ठ-340
12. मुक्तिबोध विचार और कविता जैन/मिश्र पृ.-160
13. चाँद का मुंह टेढ़ा है; मुक्तिबोध पृ.-196
14. मुक्तिबोध रचनावली द्वितीय खंड, नेमीचंद्र जैन पृ.-277-278, राजकमल प्रकाशन